पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 16.11.2018 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

माता सुशीला-हरिदेव आर्य स्मृति दिवस

यज्ञ व संगीत संध्या

रविवार, 23 दिसम्बर 2018,
सायं 4 से 7 बजे तक
आर्य समाज, सूर्य निकेतन, पूर्वी दिल्ली
–यशोवीर आर्य,संयोजक

वर्ष-35 अंक-12 मार्गशीर्ष-2075 दयानन्दाब्द 194 16 नवम्बर से 30 नवम्बर 2018 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.11.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य नेता अनिल आर्य का जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

सामाजिक कुरीतियों के विरूद्व जागरण करना आर्य समाज का दायित्व-सांसद मीनाक्षी लेखी

अनिल आर्य के व्यक्तित्व से युवा प्रेरणा लें – स्वामी आर्य वेश

मुख्य अतिथि नई दिल्ली की सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी का स्वागत करते अनिल आर्य, प्रवीन आर्या, ओमप्रकाश छाबड़ा, स्वामी आर्यवेश जी व अर्चना पुष्करना।
द्वितीय चित्र–श्री अनिल आर्य का अभिनन्दन करते महावीरसिंह आर्य, ओमवीरसिंह आर्य, चतरसिंह नागर, ओम सपरा व ओमप्रकाश यजुर्वेदी।

बुधवार, 14 नवम्बर 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज,अमर कालोनी,लाजपत नगर,नई दिल्ली में श्री जितेन्द्र डावर की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से सैकड़ों कार्यकर्ता बधाई देने पंहुचे। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवा कर किया व गायक पं.लक्ष्मीकांत काण्डपाल के मधुर भजन हुए।

समारोह की मुख्य अतिथि सांसद मीनाक्षी लेखी ने कहा कि आज समाज में बदलाव की जरूरत है, पाखण्ड–अन्धविश्वास बढ़ रहे हैं, सामाजिक कुरीतियों के विरूद्व आर्य समाज को फिर से आगे आने की आवश्यकता है। आर्य समाज के सक्रिय रहने से समाज में सुधार कार्य तेज होता है। देश की एकता अखण्डता में भी आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है अब इस कार्य को और अधिक आगे बड़ाने की आवश्यकता है। अनिल आर्य जी समाज उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं मैं इन्हें इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाये देती हुं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि अनिल आर्य का व्यक्तित्व हजारों युवाओं के लिये प्रेरणा का स्रोत है। इनका युवा उत्थान में उल्लेखनीय योगदान है, साथ ही सामाजिक व राष्ट्रीय मुद्दो पर हमेशा अग्रणी भूमिका निभाते है, समाज को इनसे बहुत आशायें हैं। प्रवीन आर्या के मधुर भजन सभी ने पसन्द किये।

इस अवसर पर अभिषेक दत (पार्षद), दर्शन कुमार अग्निहोत्री, रविदेव गुप्ता, वेद खट्टर, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, चतरसिंह नागर, के.एल.राणा, विजय चौधरी, विजय गर्ग, देवेन्द्र गुप्ता, वी.के. रैल्ली, रमेश गाडी, ओमबीर सिंह, सुरेन्द्र शास्त्री, यशोवीर आर्य, रामकुमार आर्य, वेदप्रकाश आर्य, प्रवीन आर्य, के. के. यादव (गाजियाबाद), अजय गर्ग, आचार्य प्रज्ञानदेव शास्त्री (पानीपत), विनोद–रणजीत कौर (जयपुर), राजेश मेहन्दीरता, देवदत आर्य, विजय कपूर, विजय सबरवाल, वेदप्रकाश शास्त्री, वीरेन्द्र सूद, धर्मपाल आर्य, दिनेश आर्य, विकास तिवारी, गंगाशरण आर्य, जगवीरसिंह आर्य, हंसराज आर्य, विजय मलिक, विजय भाटिया, सुशील आर्य, नरेन्द्र नांरग, कवि विजय गुप्त, विमलेश बंसल, बलराज सेजवाल, अनुराग मिश्रा, राधा भारद्वाज, सुरेश आर्य, सुनीता रसोत्रा, रवि चड्डा, सुरेन्द्र बुद्विराजा, जितेन्द्र पाहुजा, नरेन्द्र आर्य सुमन, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, ओम सपरा, डी. के. यादव (डी.जी.एम.ऐस्कॉर्टस लि.), डा.गजराजसिंह आर्य, जितेन्द्रसिंह आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, रोजी पण्डित (फरीदाबाद), चन्द्रभान अरोड़ा, वीना थरेजा, रामजीदास थरेजा, अनिल अवस्थी, ओमप्रकाश पाण्डेय, शिवकुमार भारद्वाज, ओमप्रकाश डंग, मधुर प्रकाश आर्य, सत्यपाल सैनी, सुरेन्द्र गुप्ता विशेष रूप से आदि उपस्थित रहे। समाज के मंत्री ओमप्रकाश छाबड़ा, सुभाष आर्य, अर्चना पुष्करना, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, माधव सिंह, शिवम मिश्रा, दीपक आर्य, करूणा शर्मा ने पुरूषार्थ कर समारोह को सफल बनाया। समारोह के पश्चात सभी प्रीतिभोज का आनन्द लेकर विदा हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की समर्पित मजबूत टीम राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के साथ।

135वें ऋषि दयानन्द बलिदान दिवस पर विचार एवं चिन्तन

ऋषि दयानन्द न होते तो आज हम दीपावली न मना रहे होते

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आज दीपावली का पर्व है। देश भर में व विदेश में भी जहां भारतीय आर्य हिन्दू रहते हैं, वहां दीपवली का पर्व मनाया जा रहा है। दीपावली शरद ऋतु में आश्विन मास की अमावस्या के दिन मनाई जाती है। अमावस्या के दिन रात्रि में अन्धकार रहता है जिसे दीपमालाओं के प्रकाश से दूर करने का सन्देश दिया जाता है। इस दिन ऐसा क्यों किया जाता है, इसका अवश्य कोई कारण होगा। प्राचीन काल में भारत का हर उत्सव व पर्व यज्ञ वा अग्निहोत्र करके मनाया जाता था। बाद में यज्ञ में पशु हिंसा होने लगी। इसके विरोध में बौद्ध मत व जैन मत का आविर्भाव हुआ जो अहिंसा पर आधारित मत थे। इससे वैदिक काल में किये जाने वाले अहिंसात्मक यज्ञ भी समाप्त हो गये। इनसे वायुमण्डल व वर्षा जल की शुद्धि और स्वास्थ्य आदि को होने वाले लाभों सहित जो आध्यात्मिक लाभ होते थे वह भी बन्द हो गये। अब पूजा दीप जलाकर की जाने लगी। सम्भव है यज्ञ का ही एक विकृत रूप था। यज्ञ में घृत व तेल जलता है। इसके जलने से वायु के दोश अल्पमात्रा में दूर होते हैं। वायु में विद्यमान हानिकारक किटाणुओं पर भी इसका प्रभाव पड़ता है और उनकी संख्या में कमी आती है। दीप की ज्योति की उपमा अनेक स्थानो पर जीवात्मा से भी दी जाती है। किसी घर में किसी की मृत्यु हो जाती है तो उस परिवार में वहां कुछ दिनों तक दिवंगत व्यक्ति के शयन कक्ष में एक दीपक जला कर रखा जाता है। यह एक प्रकार से आत्मा का प्रतीक माना जाता है। वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करने पर इसका कोई लाभप्रद उद्देश्य प्रतीत नहीं होता अपितु यह एक अन्धविश्वास व मिथ्या परम्परा ही प्रतीत होती है। ऋषि दयानन्द जी ने भी इस विषय में कुछ नहीं लिखा परन्तु स्पष्ट किया है कि मृत्यु होने पर अन्त्येष्टि कर्म करने के बाद मृतक व्यक्ति के लिये कोई कर्म करना शेष नहीं है। हां, घर की शुद्धि जल से व दीवारों पर चूने तथा गोबर के लेपन आदि से की जा सकती है। इससे हानिकारक किटाणुओं का नाश होता है। जहां जितनी अधिक स्वच्छता होती हैं वहां हानिकारक किटाणु उतने ही कम होते हैं। **इन्हें नष्ट करने का प्रभावशाली उपाय अग्निहोत्र यज्ञ ही है।** पं. लेखराम जी ने भी एक बार एक ऐसे घर में यज्ञ कराया था जहां सर्पो का वास था और जहां रात्रि में सर्प निकला करते थे। पं. लेखराम जी ने वहां जाकर शुद्ध गोघृत से यज्ञ कराकर उस कमरे को पूर्णतया बन्द कर दिया था जिससे रात्रि के बाद जब उसे खोला गया तो वहां सभी सर्प बेहोश पड़े हुए थे। इससे अनुमान लगता है कि यज्ञ का विशैले जीव—जन्तुओं पर प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार कार्बनडाइआक्साइड गैस से हमें हानि होती है उसी प्रकार से यज्ञ की गन्ध व वायु से मनुष्यों पर अनुकूल तथा विशैले जीव—जन्तुओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

दीपावली पर विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि यह शरद ऋतु के आगमन पर मनाया जाने वाला पर्व है। इससे पूर्व हम गर्मी व वर्षा ऋतु का सुख ले रहे थे। अब शरद ऋतु आरम्भ होने पर हमें अपने स्वास्थ्य की रक्षा करनी है। शरद ऋतु भी पर्वतों व पर्वतीय प्रदेशों में अधिक तथा मैदानी क्षेत्रों में न्यून व दक्षिण भारत के कुछ स्थानो पर बिलकुल नहीं होती। शीत ऋतु में वहां का तापक्रम कुछ कम अवश्य रहता है परन्तु वहां जनवरी के महीने में जब उत्तर भारत के सभी पर्वतों पर हिमपात होता है और लोगों के शरीरों मे ठिठुरन होती है, ऐसे में वहां किसी गर्म व ऊनी वस्त्र की आवश्यकता नहीं होती। अतः उत्तर भारत के लोगों को शीत ऋतु के कुप्रभावों से स्वयं को बचाने के लिये सावधान होना होता है। भोजन में ऐसे पदार्थों का सेवन करना होता है जिससे कि शीत से होने वाले रोग न हो। **दीपावली के दिन प्राचीन काल में नवान्न से वृहद यज्ञों का विधान था।** जिसका बिगड़ा रूप ही दीप जलाने को देखकर प्रतीत होता है। हम समझते हैं कि वृहद यज्ञ व ईश्वरोपासना करके, नये वस्त्र पहनकर, मिष्ठान्न व पकवान बनाकर व अपने प्रियजनों व निर्धन बन्धुओं में उसका वितरण करके तथा रात्रि में सरसों के तेल व घृत के दीपक जलाकर यदि दीपावली मनायें तो यह दीपावली मनाने का उचित तरीका है। इसके विपरीत पटाखों में धन का अपव्यय करके, वायु प्रदुषण करके तथा अनावश्यक हुड़दंग करके पर्व को मनाना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। इससे तो हमारी मानसिक अवस्था व सोच का पता चलता है। हमारी सोच स्वयं को स्वस्थ व प्रसन्न रखने वाली, अपने स्वजनों का कल्याण करने वाली तथा देश व समाज को आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त करने वाली होने वाली चाहिये। महर्शि दयानन्द जी के जीवन पर दृष्टि डाले तो वह यही सन्देश देते हुए प्रतीत होते हैं कि जीवन में कोई भी ऐसा कार्य न करें जिसका वेदों में विधान न हो और जिसके करने से हमें व समाज को कोई लाभ न होता हो। प्रदुषण उत्पन्न करने वाले किसी कार्य को किसी भी मनुष्य को कदापि नहीं करना चाहिये। यह कार्य यज्ञीय भावना के विरुद्ध होने से त्याज्य है। हमें अबलों व निर्धनों के जीवन को भी सुखमय बनाने के लिये कुछ दान अवश्य करना चाहिये। उनको भी अच्छा भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा व चिकित्सा सहित सुखमय जीवन व्यतीत करने का अधिकार है। यदि समाज में किसी व्यक्ति को शोषण, अन्याय, अपराध, पक्षपात, उपेक्षा, छुआछूत, अभाव व अज्ञान का सामना करने पड़े तो वह देश व समाज अच्छा या प्रशंसा के योग्य नहीं होता। वेद और महर्षि दयानन्द के जीवन से तो हमें यही शिक्षा प्राप्त होती है।

ऋषि दयानन्द ने अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से सन् 1863 में दीक्षा लेकर उनकी ही प्रेरणा से देश व समाज से अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, मिथ्या परम्पराओं को हटाने के लिये वेदों व उनकी मान्यताओं तथा सिद्धान्तों का प्रचार आरम्भ किया था। वह समाज को अज्ञान से मुक्त कर उसे ज्ञान व विद्या से पूर्णतः सम्पन्न व समृद्ध करना चाहते थे। मत—मतान्तरों का आधार भी अविद्या ही है। धर्म केवल वेद व उसकी सत्य मान्यताओं का ज्ञान व आचरण को कहते हैं। मत—मतान्तरों की अविद्या के कारण ही संसार में मनुष्य दुःखी व पीड़ित हैं। ऋषि दयानन्द के समय व उससे पूर्व मुसलमान व ईसाई हिन्दुओं का छल, भय, लोभ व ऐसे अनेक प्रकार के उपायों से अज्ञानी, ज्ञानी, निर्धन, पीड़ित लोगों का धर्मान्तरण करते थे। औरंगजेब के उदाहरण से ज्ञात होता है कि वह प्रतिदिन हिंसा के डर से सहस्रों हिन्दुओं का धर्मान्तरण करता था। ऋषि दयानन्द के समय में हिन्दुओं की संख्या कम हो रही थी व दूसरे मतों की संख्या बढ़ रही थी। हिन्दुओं की कुछ मान्यतायें व कुरीतियां भी हिन्दुओं को अपने पूर्वजों के धर्म का त्याग करने के लिये बाध्य करती थीं। यदि दयानन्द न आते तो यह क्रम चलता रहता और आज हिन्दुओं की जो संख्या है वह इससे कहीं अधिक कम होती। ऋषि ने देश को आजाद कराने के जो विचार दिये थे वह भी न मिलते। पता नहीं स्वदेशी व स्वतन्त्रता का आन्दोलन भी चलता या न चलता। ऐसी स्थिति में हिन्दुओं की स्थिति अत्यधिक चिन्ताजनक होती। जैसे पाकिस्तान व मुस्लिम देशों में हिन्दुओं को अपने धर्म पालन में स्वतन्त्रता नहीं है, वहां हिन्दू मन्दिरों का निर्माण नहीं कर सकते, वैसी ही स्थिति भारत में भी उत्पन्न हो जाती व कुछ शासकों के समय में रही भी है। भारत की मुस्लिम रियासतों हैदराबाद आदि में तो हिन्दुओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। ऋषि दयानन्द ने इन सब बातों को जाना व समझा था। आर्य हिन्दुओं को इन आपदाओं व संकटों से बचाने के लिये उन्हें वेद—ज्ञान का प्रचार उचित प्रतीत हुआ जिससे निःसन्देह सनातन वैदिक आर्य धर्म की रक्षा हुई है। हमें तो लगता है कि आज ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रभाव से ही हम आर्य हिन्दू देश में अपनी धर्म व संस्कृति को बचाये हुए हैं। यदि ऋषि दयानन्द न आये होते और उन्होंने जो कार्य किया वह न किया होता तो हम आर्य हिन्दू सुरक्षित रह पाते, इसमें सन्देह होता है। भारत के सभी विधर्मी आर्य हिन्दू पूर्वजों की ही सन्तानें हैं। पाकिस्तान व बंगला देश आदि में जो मुस्लिम बन्धु हैं उनके पूर्वज भी आर्य हिन्दू ही थे। इतने लोग वैदिक धर्म से बाहर हो गये थे। ऋषि दयानन्द जी के आने के बाद धर्मान्तरण पर जो रोक लगी है उसका कारण ऋषि दयानन्द का वेदों का प्रचार, आर्यसमाज का संगठन व उसके कार्य आदि ही हैं। इसी से आर्य हिन्दू बचे सके हैं। कुछ लोग मानते हैं कि दीपावली के दिन राम रावण का वध करके अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासियों ने उनकी विजय व आगमन के उपलक्ष्य में अयोध्या में दीपक जलाये थे। यह बात इतिहास के प्रमाणों से सिद्ध नहीं होती। तथापि यदि हम इस दिन रामचन्द्र जी की विजय को स्मरण करते हैं तो इसमें कोई बुराई नहीं है। हमें यह याद रखना चाहिये कि राम चन्द्र जी ने रावण को पराजित किया था परन्तु दीवाली की तिथि व उससे सप्ताह दो सप्ताह पूर्व नहीं। हमारा कर्तव्य है कि हम इतिहास की रक्षा करें। दीपावली वैदिक वर्णव्यवस्था के अनुसार वैश्य वर्ण का पर्व भी माना जाता है। कुछ बातें उनके पक्ष में जाती हैं। आज तो सभी त्यौहार सभी लोग मिलकर मनाते हैं। यह एक अच्छी बात है।

आज हम, सारा आर्य हिन्दू समाज व विश्व के सभी लोग ऋशि दयानन्द जी द्वारा विश्व को वेदों का ज्ञान देने के लिये ऋणी हैं। हम ऋशि दयानन्द जी को आज उनके बलिदान दिवस पर कोटि—कोटि नमन करते हैं। हमारा सौभाग्य है कि हम ईश्वरीय ज्ञान वेद से सम्पन्न हैं। यही ज्ञान व इसके अनुरूप कर्म मनुश्य को जन्म—जन्मान्तर में लौकिक व पारलौकिक सुख प्राप्त कराते है। हमें अपनी सामर्थ्य के अनुसार वेदों का प्रचार अवश्य करना चाहिये। इसमें हमारा व अन्यों का भला है। इसी से हमारी धर्म व संस्कृति सुरक्षित रह सकती है। अपने इस विचार प्रवाह को हम यहीं विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

—196 चुक्खूवाला—2, देहरादून—248001 फोनः09412985121

शोक समाचार : विनम्र श्रद्धाजंलि

1. श्री सुभाष सिंघल (पूर्व प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद) का निधन।
2. श्री सुशील मलिक (आर्य समाज, हड़सन लाईन, दिल्ली) का निधन।
3. श्री देवेन्द्रनाथ शर्मा (जनकपुरी, दिल्ली) का निधन।
4. श्री कान्ता आर्या (पत्नी श्री चन्द्रभानु आर्य) मुखर्जी नगर, दिल्ली का निधन।

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान जी**

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्म मुनि जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी

के सानिध्य एवं युवा वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 1, 2, 3 फरवरी 2019 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थानः पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली-110026

विराट् शोभा यात्राः शुक्रवार 1 फरवरी 2019, प्रातः 10:30 बजे

पंजाबी बाग व पंजाबी बाग विस्तार के विभिन्न क्षेत्रों में शोभा यात्रा निकाली जायेगी।

मुख्य आकर्षण

* राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन
* वेद रक्षा सम्मेलन
* शिक्षा-संस्कृति बचाओ सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या
* राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन
* राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था रहेगी

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 15 जनवरी 2019 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्कः श्री दुर्गेश आर्य-9868664800, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री-9810884124
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 15 जनवरी 2019 तक गोपाल जैन-9810756571, प्रदीप गोगिया-8800550785, विनोद कालरा-9899444347, संतोष शास्त्री-9868757140, देवमित्र आर्य-9313199062 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदकः

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	सुभाष आर्य, रवि चड्डा, सत्यानन्द आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष
9810117464	9013137070	9871581398	9810667581, 9818343460, 9313923155

श्री अनिल आर्य का स्वागत करते समाज के प्रधान श्री जितेन्द्र डावर,सांसद मीनाक्षी लेखी, मंत्री ओमप्रकाश छाबड़ा,प्रवीन आर्या व वीना थरेजा। द्वितीय चित्र-श्री अनिल आर्य का अभिनन्दन करते आर्य समाज,बड़ा बाजार,पानीपत के प्रधान अजय गर्ग, आचार्य प्रज्ञानदेव जी आदि।

आर्य समाज मोती बाग,दिल्ली की बालिकायें स्वागत गान प्रस्तुत करते हुए, संयोजक करूणा शर्मा। द्वितीय चित्र-रविवार, 11 नवम्बर 2018 को ए.टी.एस.आर्य परिवार इन्द्रापुरम,गाजियाबाद में 11 कुण्डीय यज्ञ श्री महेन्द्र भाई के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। चित्र में-भजनोपदेशक सुदेश आर्या का अभिनन्दन करते मुख्य अतिथि अनिल आर्य,साथ में-प्रवीन आर्य,महेन्द्र भाई,अभिषेक गुप्ता, विनोद गुप्ता, संयोजक देवेन्द्र गुप्ता, प्रधान विजय गर्ग व मंत्री यज्ञवीर चौहान।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 135 वां महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस दिल्ली हाट, पीतमपुरा ,दिल्ली में सोल्लास सम्पन्नः 15 कर्मठ आर्य महिलाओं का किया अभिनन्दन

वीरवार, 8 नवम्बर 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में दिल्ली हाट, पीतमपुरा, दिल्ली में 135 वां महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस सोल्लास मनाया गया। कार्यकम का शुभारम्भ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने 11 कुण्डीय यज्ञ के साथ किया व श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन', अंकित उपाध्याय व प्रवीन आर्या के मधुर भजन हुए। हजारों आर्य जनों ने संगीत संध्या का आनन्द लिया। चित्र में–स्वामी कमलानन्द जी (न्यूजर्सी) का स्वागत करते अनिल आर्य, प्रवीन आर्या, दुर्गेश आर्य, सौरभ गुप्ता, मदन खुराना, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, सुरेश आर्य, अनिल अवस्थी व अरूण आर्य।

दीप प्रज्जवलित करते राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य,साथ में रेखा गुप्ता,ममता नागपाल(पूर्व पार्षद),संजीव शर्मा, अमित नागपाल,ओमप्रकाश जैन, मदन खुराना, सुरेश आर्य व डी.एल. नांरग। द्वितीय चित्र–श्री दर्शन अग्निहोत्री का स्वागत करते अनिल आर्य, दुर्गेश आर्य, गवेन्द्र शास्त्री व प्रवीन आर्य।

श्रीमती वन्दना जावा का स्वागत करते अंजु जावा, उर्मिला आर्या,कविता आर्या। द्वितीय चित्र–भाजपा नेता रेखा गुप्ता का स्वागत करते राजरानी अग्रवाल, सुषमा आर्या, प्रवीन आर्या, उर्मिला आर्या, ममता नागपाल व अंजु जावा।

श्रीमती आशा भटनागर का स्वागत करते ममता नागपाल,उर्मिला आर्या, कविता आर्या, मीना आर्या, प्रवीन आर्या,राजरानी अग्रवाल व विजय हंस।
द्वितीय चित्र–श्रीमती इन्दु मेहता का स्वागत करते उर्मिला व ममता नागपाल।

श्रीमती चन्द्र अरोड़ा का स्वागत करते उर्मिला आर्या,प्रवीन आर्या व ममता नागपाल। द्वितीय चित्र–श्रीमती रेखा गुप्ता का अभिनन्दन करते प्रवीन आर्या,उर्मिला आर्या,ममता नागपाल।

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद है उसका नाम

अपीलः केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड -SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित। – डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970